

समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन: चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं भविष्य की दिशा

सोनू रजक¹, नवी रजा खाँ², उत्तम कुमार³

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, मानू कॉलेज आफ टीचर एजुकेशन दरभंगा (बिहार) मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद (तेलंगाना)-500032

²शोधार्थी, मानू कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन दरभंगा, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद (तेलंगाना)-500032

³शोधार्थी, मानू कॉलेज आफ टीचर एजुकेशन दरभंगा (बिहार) मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद (तेलंगाना)-500032

¹Email: -sonu.06541@gmail.com, ²Email: -navirazamanuu@gmail.com ³Email: -uttamkumar8676@gmail.com



Received 25 July 2026

Accepted 01 August 2026

Published 03 August 2026

Corresponding Author:

सोनू रजक

Email: sonu.06541@gmail.com

Doi: <https://doi.org/10.64880/ijeagr.v1i3.03>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार रही है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, वेदांग, दर्शन, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोल विज्ञान तथा नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्र इस समृद्ध ज्ञान परंपरा के प्रमाण हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल सूचना या कौशल तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास के माध्यम से आदर्श नागरिक का निर्माण करना रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से बदल रहा है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा बदलती सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं ने शिक्षा प्रणाली के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक शिक्षा केवल रोजगारपरक न होकर मूल्यपरक, जीवनोपयोगी, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध तथा मानवीय संवेदनाओं से युक्त हो। भारतीय ज्ञान परंपरा इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems-IKS) को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने पर विशेष बल दिया है। नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, परंपरा, नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरणीय चेतना तथा राष्ट्रीय गौरव की भावना का विकास करना है। इसके लिए पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, शोध तथा शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन पर विशेष ध्यान दिया गया है। हालाँकि आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावी समावेशन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं,

जैसे—उपयुक्त पाठ्य सामग्री का अभाव, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, पारंपरिक ज्ञान के वैज्ञानिक सत्यापन की आवश्यकता, भाषा संबंधी बाधाएँ, तथा वैश्विक शिक्षा व्यवस्था के साथ संतुलन स्थापित करने की चुनौती। इसके बावजूद भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों के समग्र विकास, मूल्यपरक शिक्षा, नवाचार, सतत विकास तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत अध्याय में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप, आधुनिक शिक्षा में उसके समावेशन की आवश्यकता, समावेशन के समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता का भी समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे आधुनिक शिक्षा को अधिक समावेशी, मूल्यपरक एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध बनाया जा सके।

मुख्य शब्द:- भारतीय ज्ञान परंपरा, समकालीन शिक्षा, समावेशन, मूल्यपरक शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, सर्वांगीण विकास, व्यक्तित्व निर्माण।

"शिक्षा:- सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् का चिंतन, आत्म अंतर्निहित ज्योति की अभिप्रेरणा, स्वानुशासन, सच्चरित्रता, संस्कारों का आभूषण, न्याय, समता, समानता व स्वतंत्रता का पालक, स्वास्थ्य का सलाहकार, ज्ञान का कोषागार, सामाजिक सौहार्द व सद्भावना का आगार, रोजी-रोटी का साधन, नैतिक मानवीय मूल्यों की कुंजी, भावी पीढ़ी की पूंजी, समाज के नवनिर्माण का मार्गदर्शक, विश्वशांति, विश्वबंधुत्व और मानव को संपूर्ण मानव बनाना ही शिक्षा है।"

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा एवं स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System-IKS) भारत की प्राचीन सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक विरासत का समग्र स्वरूप है, जिसका विकास हजारों वर्षों में हुआ है। यह परंपरा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—शिक्षा, दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, योग, कला, साहित्य, कृषि, पर्यावरण तथा नैतिक मूल्यों—को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है, जिसमें बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास समान रूप से महत्वपूर्ण माना गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, पुराण, स्मृतियाँ, बौद्ध एवं जैन साहित्य, अर्थशास्त्र, योगशास्त्र तथा आयुर्वेद जैसे प्राचीन ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचार ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चिंतन, तर्क, अनुसंधान, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण तथा मानव कल्याण से संबंधित व्यापक ज्ञान भी उपलब्ध है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप बहुआयामी, समावेशी एवं जीवनोपयोगी है। इसके प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

1. समग्र (Holistic) स्वरूप

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं था, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना था। इसमें ज्ञान, कौशल, चरित्र, नैतिकता और आध्यात्मिक उन्नति को समान महत्व दिया गया।

2. मूल्यपरक स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, सेवा, सहिष्णुता, अनुशासन, कर्तव्यपरायणता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों का उद्देश्य आदर्श नागरिक का निर्माण करना है।

3. वैज्ञानिक एवं तार्किक स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आस्था पर आधारित नहीं है, बल्कि इसमें गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, धातु विज्ञान, वास्तु, योग तथा खगोल विज्ञान जैसे विषयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगत चिंतन का समावेश मिलता है। आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, कणाद तथा भास्कराचार्य जैसे विद्वानों का योगदान इसका प्रमाण है।

4. प्रकृति-केंद्रित स्वरूप

भारतीय परंपरा में प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। जल, वायु, वन, पशु-पक्षी एवं जैव विविधता के संरक्षण को धर्म और संस्कृति से जोड़कर पर्यावरण संतुलन बनाए रखने पर बल दिया गया है।

5. गुरु-शिष्य परंपरा

भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक एवं चरित्र-निर्माता माने जाते थे। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ जीवन मूल्यों का विकास भी था।

6. अनुभव एवं व्यवहार आधारित स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं थी, बल्कि अनुभव, अभ्यास, संवाद, चिंतन, योग, ध्यान तथा दैनिक जीवन के व्यवहार से जुड़ी हुई थी।

7. समावेशी एवं सार्वभौमिक स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण "वसुधैव कुटुम्बकम्" तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्शों पर आधारित है, जो समस्त मानवता के कल्याण और विश्वबंधुत्व का संदेश देता है।

आधुनिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप वैश्वीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), डिजिटलीकरण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) के प्रभाव से तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशल, जैसे-आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), रचनात्मकता (Creativity), समस्या-समाधान (Problem Solving), संचार कौशल (Communication) तथा सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning) का विकास करना भी है। शिक्षा प्रणाली में तकनीकी नवाचारों के कारण शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया अधिक लचीली, सुलभ और विद्यार्थी-केंद्रित बनती जा रही है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लागू होने के बाद शिक्षा व्यवस्था में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। नीति में बहुविषयक (Multidisciplinary) शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), कौशल-आधारित शिक्षा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, समावेशी शिक्षा तथा डिजिटल शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इससे शिक्षा को अधिक लचीला, गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारोन्मुख बनाने का प्रयास किया जा रहा है। आधुनिक शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता डिजिटल तकनीकों का व्यापक उपयोग है। स्मार्ट कक्षाएँ, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल कक्षाएँ, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल पुस्तकालय तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण उपकरणों ने शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया है। कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा और मिश्रित शिक्षण (Blended Learning) का महत्व और अधिक बढ़ गया, जिससे शिक्षा के नए आयाम विकसित हुए। इसके साथ ही आधुनिक शिक्षा अनेक चुनौतियों का भी सामना कर रही है। शिक्षा का अत्यधिक व्यावसायीकरण, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का हास, परीक्षा-केंद्रित अधिगम, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल असमानता, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी तथा तकनीक पर बढ़ती निर्भरता प्रमुख समस्याएँ हैं। कई बार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना रह जाता है, जबकि व्यक्तित्व

निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक विकास और सांस्कृतिक चेतना जैसे आयाम अपेक्षित महत्व नहीं प्राप्त कर पाते। ऐसी परिस्थितियों में आधुनिक शिक्षा को अधिक संतुलित, मूल्यपरक और समग्र बनाने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित नैतिक मूल्यों, जीवन-दर्शन, पर्यावरणीय चेतना, योग, ध्यान तथा गुरु-शिष्य परंपरा जैसे तत्व आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय, संस्कारयुक्त और जीवनोपयोगी बना सकते हैं। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का समुचित समावेशन समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System-IKS) भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक धरोहर है, जिसने सदियों से मानव जीवन को ज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता के माध्यम से समृद्ध किया है। वर्तमान समय में जब शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) के प्रभाव से निरंतर परिवर्तित हो रही है, तब आधुनिक शिक्षा को केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रखकर उसे मूल्यपरक, समावेशी तथा सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाना आवश्यक हो गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने पर विशेष बल दिया है। नीति के अनुसार विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, योग, आयुर्वेद, गणित, पर्यावरणीय ज्ञान तथा नैतिक मूल्यों से परिचित कराना आवश्यक है, जिससे उनमें राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास हो सके।

आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है—

1. पाठ्यक्रम में समावेशन

विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन, भारतीय गणित, आयुर्वेद, योग, पर्यावरणीय ज्ञान तथा भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को भारत की बौद्धिक विरासत का ज्ञान प्राप्त होगा।

2. मूल्यपरक शिक्षा का विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सेवा, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाकर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

3. योग एवं ध्यान का समावेशन

योग, प्राणायाम एवं ध्यान भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण देन हैं। इन्हें विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में नियमित रूप से अपनाने से विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, एकाग्रता तथा भावनात्मक सुदृढ़ता का विकास होता है।

4. भारतीय भाषाओं का संवर्धन

भारतीय ज्ञान का विशाल भंडार संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। इसलिए मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देना भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावी समावेशन का महत्वपूर्ण माध्यम है।

5. अनुभवात्मक एवं कौशल-आधारित शिक्षा

भारतीय शिक्षा परंपरा में केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव, अभ्यास, संवाद एवं व्यावहारिक अधिगम को भी महत्व दिया गया है। आधुनिक शिक्षा में परियोजना-आधारित अधिगम, सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय ज्ञान एवं कौशल विकास को बढ़ावा देकर इस परंपरा को सशक्त बनाया जा सकता है।

6. अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा

भारतीय ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक, गणितीय, चिकित्सा एवं पर्यावरणीय पक्षों पर आधुनिक अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक परीक्षण होगा तथा नवाचार के नए अवसर विकसित होंगे।

7. तकनीक और भारतीय ज्ञान का समन्वय

डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा वर्चुअल शिक्षण के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को अधिक प्रभावी एवं व्यापक बनाया जा सकता है। प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण, ऑनलाइन पाठ्यक्रम तथा डिजिटल अभिलेखागार इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं।

समावेशन की प्रमुख चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में समावेशन एक महत्वपूर्ण एवं समयानुकूल पहल है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यदि इन चुनौतियों का समुचित समाधान नहीं किया गया, तो भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित स्थान दिलाना कठिन हो सकता है। प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. उपयुक्त पाठ्यक्रम एवं अध्ययन सामग्री का अभाव

भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित प्रमाणिक, अद्यतन एवं विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों तथा अध्ययन सामग्री का अभाव है। उपलब्ध सामग्री का अधिकांश भाग प्राचीन भाषाओं में है, जिससे उसका प्रभावी उपयोग सीमित हो जाता है।

2. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक इसके दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक पक्षों से भली-भाँति परिचित हों। वर्तमान में ऐसे प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

3. भाषा संबंधी कठिनाइयाँ

भारतीय ज्ञान का बड़ा भाग संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अन्य प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध है। इन भाषाओं का सीमित ज्ञान होने के कारण विद्यार्थी और शिक्षक मूल स्रोतों तक आसानी से नहीं पहुँच पाते।

4. वैज्ञानिक प्रमाणिकता एवं शोध की आवश्यकता

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक सिद्धांत वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, किंतु उनके व्यवस्थित वैज्ञानिक परीक्षण, प्रलेखन एवं समकालीन शोध की आवश्यकता है। बिना प्रमाण-आधारित अध्ययन के उनका व्यापक स्वीकार कठिन हो सकता है।

5. आधुनिक एवं पारंपरिक ज्ञान में संतुलन

वर्तमान शिक्षा प्रणाली आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर आधारित है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा को इस प्रकार समाहित करना आवश्यक है कि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पारंपरिक ज्ञान के बीच संतुलन बना रहे।

6. जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव

विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा कुछ शिक्षकों में भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व के प्रति पर्याप्त जागरूकता नहीं है। कई बार इसे केवल धार्मिक या पारंपरिक विषय मान लिया जाता है, जबकि इसका स्वरूप व्यापक एवं बहुआयामी है।

7. संस्थागत एवं नीतिगत चुनौतियाँ

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने पर बल दिया है, फिर भी सभी शिक्षण संस्थानों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता तथा स्पष्ट कार्ययोजना की आवश्यकता है।

8. डिजिटल संसाधनों की सीमित उपलब्धता

भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित अनेक प्राचीन ग्रंथ, पांडुलिपियाँ एवं शोध सामग्री अभी भी पूर्ण रूप से डिजिटाइज़ नहीं हुई हैं। गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री और मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) की कमी भी एक चुनौती है।

9. वैश्विक प्रतिस्पर्धा का दबाव

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था रोजगार, तकनीकी कौशल और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर अधिक केंद्रित है। ऐसे वातावरण में मूल्यपरक एवं सांस्कृतिक शिक्षा के लिए पर्याप्त समय और स्थान सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

10. बहुविषयक समन्वय का अभाव

भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभावी समावेशन तभी संभव है जब शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, पर्यावरण, दर्शन और सामाजिक विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों के बीच समन्वय स्थापित किया जाए। वर्तमान में यह समन्वय सीमित स्तर पर दिखाई देता है।

समावेशन की संभावनाएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में समावेशन केवल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्यपरक, नवाचारी और वैश्विक दृष्टि से समृद्ध बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems-IKS) के प्रति बढ़ती रुचि ने इसके समावेशन की अनेक संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। प्रमुख संभावनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. मूल्यपरक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण

भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, अनुशासन, सेवा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसके समावेशन से विद्यार्थियों में नैतिकता, चरित्र निर्माण एवं उत्तरदायी नागरिकता का विकास संभव है।

2. समग्र व्यक्तित्व विकास

भारतीय शिक्षा दर्शन शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के संतुलित विकास पर बल देता है। योग, ध्यान, प्राणायाम तथा जीवन-दर्शन को शिक्षा से जोड़कर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को सुदृढ़ किया जा सकता है।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा आधारित शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन तथा अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करती है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन नीति के उद्देश्यों की प्रभावी पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है।

4. अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन

भारतीय गणित, आयुर्वेद, योग, कृषि, धातु विज्ञान, पर्यावरण तथा खगोल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में आधुनिक अनुसंधान की व्यापक संभावनाएँ हैं। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से नए शोध एवं नवाचार विकसित किए जा सकते हैं।

5. भारतीय भाषाओं एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिकांश साहित्य संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। इसके अध्ययन एवं शिक्षण से भारतीय भाषाओं, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन संभव होगा।

6. डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से व्यापक प्रसार

ई-लर्निंग, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा वर्चुअल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को देश-विदेश के विद्यार्थियों तक सरलता से पहुँचाया जा सकता है। इससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण भी होगा।

7. वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान की प्रतिष्ठा

योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन तथा ध्यान जैसी भारतीय ज्ञान परंपराओं को विश्वभर में मान्यता प्राप्त हो रही है। आधुनिक शिक्षा में इनके समावेशन से भारत की ज्ञान-परंपरा को वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

8. सतत विकास एवं पर्यावरणीय चेतना का विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकृति के साथ संतुलित जीवन, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास पर बल देती है। इन सिद्धांतों को शिक्षा में शामिल करके विद्यार्थियों में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और टिकाऊ जीवनशैली की भावना विकसित की जा सकती है।

9. आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान

भारतीय ज्ञान, स्थानीय कौशल, पारंपरिक तकनीकों तथा स्वदेशी नवाचारों को शिक्षा से जोड़कर आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को सशक्त बनाया जा सकता है। इससे स्थानीय संसाधनों एवं उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलेगा।

10. वैश्विक एवं स्थानीय ज्ञान का समन्वय

भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य आधुनिक विज्ञान का विरोध करना नहीं, बल्कि उसके साथ समन्वय स्थापित करना है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भारतीय ज्ञान के समन्वय से ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सकती है जो स्थानीय आवश्यकताओं और वैश्विक मानकों—दोनों के अनुरूप हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (National Education Policy-2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार लाने वाली एक महत्वपूर्ण नीति है। इसका उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, बहुविषयक, लचीला, कौशल-आधारित तथा मूल्यपरक बनाना है। इस नीति की एक प्रमुख विशेषता **भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems-IKS)** को शिक्षा के सभी स्तरों पर समुचित स्थान प्रदान करना है। नीति यह स्वीकार करती है कि भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा के लिए भी अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक चेतना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए नीति में भारतीय भाषाओं, कला, संस्कृति, दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान तथा पर्यावरणीय ज्ञान को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयाम

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को पाठ्यक्रम में स्थान

नीति के अनुसार विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन, साहित्य, इतिहास, गणित, विज्ञान, योग, आयुर्वेद तथा अन्य पारंपरिक ज्ञान को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी भारत की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विरासत से परिचित हो सकें।

2. मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं पर बल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा के माध्यम से शिक्षा देने की अनुशंसा करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिकांश साहित्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है, इसलिए मातृभाषा आधारित शिक्षा इसके प्रभावी अध्ययन में सहायक सिद्ध होती है।

3. मूल्यपरक एवं समग्र शिक्षा

नीति विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास पर भी बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य, अहिंसा, सेवा, करुणा, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है।

4. बहुविषयक (Multidisciplinary) शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 विभिन्न विषयों के बीच समन्वय स्थापित करने पर बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा भी विज्ञान, दर्शन, गणित, चिकित्सा, पर्यावरण एवं साहित्य के समग्र अध्ययन की पक्षधर रही है। इससे विद्यार्थियों में व्यापक एवं समग्र दृष्टिकोण विकसित होता है।

5. अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन

नीति भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों पर अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देती है। योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित, धातु विज्ञान, कृषि, पर्यावरण एवं पारंपरिक तकनीकों पर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से नए ज्ञान का सृजन किया जा सकता है।

6. प्रौद्योगिकी और भारतीय ज्ञान का समन्वय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन अधिगम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। इन माध्यमों से भारतीय ज्ञान परंपरा का डिजिटलीकरण, संरक्षण तथा वैश्विक स्तर पर प्रसार संभव है।

7. शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा

नीति के अनुसार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय शिक्षा दर्शन, भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं मूल्यपरक शिक्षा को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षक इन अवधारणाओं को प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचा सकें।

भारतीय ज्ञान परंपरा के क्रियान्वयन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूमिका

- शिक्षा को भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से जोड़ना।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय पहचान एवं सांस्कृतिक गौरव की भावना विकसित करना।
- भारतीय भाषाओं एवं स्थानीय ज्ञान परंपराओं को प्रोत्साहित करना।
- पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करना।
- शोध, नवाचार एवं आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को सशक्त बनाना।
- वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रतिष्ठा बढ़ाना।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे समृद्ध एवं प्राचीन ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसने शिक्षा, दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, योग, पर्यावरण तथा नैतिक मूल्यों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसका मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय मूल्यों का विकास करना है। वर्तमान समय में जब शिक्षा वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) तथा तीव्र तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems-IKS) को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने का स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। नीति का उद्देश्य शिक्षा को भारतीय संस्कृति, भाषा, नैतिक मूल्यों एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए विद्यार्थियों में समग्र व्यक्तित्व का विकास करना है। यद्यपि इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, उपयुक्त अध्ययन सामग्री का अभाव, भाषा संबंधी कठिनाइयाँ तथा संसाधनों की सीमाएँ जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी इनका समाधान सुनियोजित प्रयासों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण, शोध, तकनीकी सहयोग तथा संस्थागत प्रतिबद्धता के माध्यम से किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा का संतुलित समन्वय ऐसी शिक्षा

व्यवस्था का निर्माण कर सकता है, जो ज्ञान, कौशल, नैतिकता, नवाचार, सांस्कृतिक चेतना तथा वैश्विक दृष्टिकोण का संतुलित विकास सुनिश्चित करे। यह समन्वय भारत को ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर एवं विश्वगुरु बनने की दिशा में सशक्त आधार प्रदान करेगा।

सुझाव

1. विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों को व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया जाए।
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं क्षमता-विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित प्रमाणिक, शोधपरक एवं विद्यार्थी-केंद्रित अध्ययन सामग्री का विकास किया जाए।
4. संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों का सरल भाषा में अनुवाद एवं डिजिटलीकरण किया जाए।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक पक्षों पर अंतर्विषयक (Interdisciplinary) अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाए।
6. योग, ध्यान, मूल्यपरक शिक्षा एवं पर्यावरणीय चेतना को विद्यालयी शिक्षा का नियमित भाग बनाया जाए।
7. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ई-लर्निंग एवं डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यापक प्रसार किया जाए।
8. विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) से संबंधित अध्ययन केंद्र एवं शोध परियोजनाएँ स्थापित की जाएँ।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधानों का प्रभावी एवं चरणबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।
10. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित कर विद्यार्थियों में नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप कौशल विकसित किए जाएँ।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में प्रभावी समावेशन न केवल भारत की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत को सुदृढ़ करेगा, बल्कि ऐसी शिक्षा प्रणाली के निर्माण में भी सहायक होगा जो मानवीय मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और सतत विकास के सिद्धांतों पर आधारित हो। यही समन्वित शिक्षा व्यवस्था भारत के भविष्य को अधिक सशक्त, समावेशी एवं ज्ञान-केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

संदर्भ :-

1. अग्रवाल, जे. सी. (2019). *शिक्षा के सिद्धांत एवं दर्शन* (14वाँ संस्करण). विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 (एनसीईएफ-2023)*. एनसीईआरटी।
4. शर्मा, आर. ए. (2017). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. आर. लाल बुक डिपो।
5. शर्मा, वाई. के. (2018). *भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ*. कनिष्का पब्लिशर्स।
6. राधाकृष्णन, एस. (2009). *भारतीय दर्शन* (खंड 1-2). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. अरविंद, श्री. (2003). *भारत का पुनर्जागरण*. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन।
8. विवेकानन्द, स्वामी. (2013). *स्वामी विवेकानन्द के संपूर्ण कार्य* (खंड 4). अद्वैत आश्रम।
9. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. (2009). *व्यक्तित्व*. रूपा पब्लिकेशन्स।
10. यूनेस्को. (2021). *हमारे साझा भविष्य की पुनर्कल्पना: शिक्षा के लिए नया सामाजिक अनुबंध*. यूनेस्को पब्लिशिंग।
11. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2021). *भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems): उच्च शिक्षा के लिए रूपरेखा*.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.